“सुधा अरोड़ा का कथा साहित्य : एक अनुशीलन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध रूपरेखा

शोधछात्रा

शेख़ नसीम बानो शेख़ अहेमद

एम.ए., बी.एड., एम.फिल., (हिंदी)

शोध-निर्देशक

डॉ. भगवान एन. जाधव

सहयोगी प्राध्यापक,

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,

पीपल्स कॉलेज, नांदेड |

अनुसंधान केंद्र

पीपल्स कॉलेज, नांदेड

मार्च, २०२२

“सुधा अरोड़ा का कथा साहित्य : एक अनुशीलन”

भूमिका :

कथा साहित्य आधुनिक युग की देन है कहना अधिक समीचीन होगा| साहित्य में गद्य का प्रयोग जीवन के यथार्थ का द्योतक है| साधारण बोलचाल की भाषा व्दारा लेखन के लिए रचना के पात्रों, उनकी समस्याओं तथा उनके जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना आसान हो जाता है| कथा साहित्यकार का लक्ष्य केवल पाठकों का मनोरंजन करना मात्र नहीं| वह सच्चे अर्थ में अपने युग का इतिहासकार होता है| जो सत्य और कल्पना दोनों का सहारा लेकर व्यापक सामाजिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है| सुधा अरोड़ा २१वीं सदी की लेखिका है| वह अपने साहित्य के माध्यम से स्त्रियों का दर्दभरा जीवन प्रस्तुत करती है| मैं उनके कहानियों को पढ़कर उनके साहित्य की ओर आकृष्ट हुई हूँ| इसकारण अपने रूचि के अनुसार अनुसंधान कार्य करना चाहती हूँ|

विषय चयन की प्रेरणा :

कथा साहित्य पाठक को बाँधकर रखता है| यह एक वजह रही है कि, मैंने कथा साहित्य पर काम करने के बारे में सोचा| मेरा लगाव गद्य साहित्य की ओर पद्य साहित्य से ज्यादा रहा है| इसलिए मैंने गद्य साहित्य को अनुसंधान के विषय के रूप में चयन किया हुआ है| मैंने अपनी रूचि बताने पर मेरे शोधनिर्देशक डॉ. भगवान जाधव सर जी ने मुझे कुछ प्रश्न पूछे| जिस पर मैं शोधकार्य करना चाहती हूँ अंतत: हम दोनों के चर्चा से यह निष्कर्ष निकला कि महिला कथा साहित्य पर शोध कार्य हो सकता है| ‘सुधा अरोड़ा’ यह नये जमाने की लेखिका है और उनके साहित्य पर काम भी नहीं हुआ है| अतह

उनके साहित्य पर काम किया जा सकता है| मेरा एम.फिल. का शोधकार्य भी सुधा अरोड़ा की कहानियों पर हुआ है| जिसका शीर्षक 'सुधा अरोड़ा के कहानियों में पारिवारिक हिंसा का स्वरूप' यह था| इसलिए मैं सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य पर आगे काम करना चाहती हूँ|

विषय का महत्त्व :

कथा साहित्य में कुछ यथार्थ और कुछ कल्पना का मिश्रण होता है| हिंदी महिला लेखिकाओं के लेखन में यथार्थ अधिक मात्रा में आता है| जैसे - मन्नू भंडारी, सुधा अरोड़ा आदि| सुधा अरोड़ा के साहित्य में कल्पना के साथ-साथ यथार्थ अधिक है| लेखिका के भीतर दबी हुई कुछ बाते हैं | जो उनके साहित्य में आती है| हो सकता है पाठक इनके साहित्य को अनेक अंगों से पढ़ेंगे| यह भी हो सकता है कि, कोई पाठक इनकी प्रेरणा लेकर साहित्य लिखना और पढना शुरू करें| सुधा अरोड़ा का कथा साहित्य विचार, समस्याओं को लेकर आता है| सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में हिंसा का चित्रण आया है| इसलिए इस पर अनुसंधान की आवश्यकता है|

अनुसंधान का उद्देश्य :

कोई भी कार्य बिना उद्देश्य के पूर्णत्व की ओर नहीं जा सकता| उसी तरह इस अनुसंधान का उद्देश्य है| कुछ उद्देश्य निम्नलिखित रूप से दिए हुए हैं -

१) लेखिका सुधा अरोड़ा के साहित्य को नये दृष्टि से पाठकों के सामने लाना|
२) सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में व्यक्त हिंसा की जानकारी उजागर करना|
३) लेखिका सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में आयी हुयी हिंसा एवं उसके प्रकारों से परिचित करना|

४) लेखिका सुधा अरोड़ा के साहित्य का हिंसात्मक दृष्टिकोण का अध्ययन करना|

५) सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य की विवेचना करना |

६) सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य की भाषा शिल्प का अध्ययन करना |

पूर्ववर्ती शोधकार्य :

मेरे अध्ययन के अनुसार सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य पर कुछ कम अध्ययन हुआ है| किये गए अनुसन्धान में -

१) "सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में चेतना के विभिन्न सन्दर्भ"

२) सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में स्त्री - विमर्श

उक्त दो अनुसन्धान से हटकर मेरा अनुसन्धान का शीर्षक **'सुधा अरोड़ा का कथा साहित्य : एक अनुशीलन'** यह है| जहाँ तक मेरी जानकारी है इसपर कार्य नहीं हुआ है|

व्याप्ति एवं सीमा :

इस अनुसंधान की सीमा यह है कि, सुधा अरोड़ा के सिर्फ कथा साहित्य पर अध्ययन किया जाएगा| जिसके अंतर्गत उनका उपन्यास और कहानी साहित्य आएगा| इस कार्य की व्याप्ति में लेखिका के कथा साहित्य में आया हुआ 'हिंसा के प्रकारों' पर विस्तार से अध्ययन किया जाएगा| उल्लेखित बिन्दुओं का ही इस अनुसन्धान में अध्ययन किया जाएगा |

अनुसंधान की पद्धतियाँ :

अनुसंधान के कार्य में खासकर भाषा साहित्य में पध्दतियों का बड़ा महत्त्व होता है| उसके बिना कार्य सटीक और संगत नहीं हो सकता| इस अनुसंधान में

निम्नलिखित पध्दतियों और उपपध्दतियों का सहारा लेकर यह अनुसंधान कार्य किया जायेगा|

१) व्याख्यात्मक पद्धति

२) विश्लेषनात्मक पद्धति

३) विवेचनात्मक पद्धति

४) आलोचनात्मक पद्धति

५) मननात्मक पद्धति

अनुसंधान के अध्याय :

इस अनुसंधान को मुख्यत: छ: अध्यायों में विभाजित किया हैं| अनुसन्धान के अध्यायों में आवश्यकता नुसार अनुसन्धान कार्य करते समय परिवर्तन किया जा सकता है| जो निम्नलिखित रूप से हैं -

प्रथम अध्याय : सुधा अरोड़ा का व्यक्तित्व एवं सामान्य परिचय

२.१. सुधा अरोड़ा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२.२ सुधा अरोड़ा के रचनाओं का सामान्य परिचय

२.३ अध्याय निष्कर्ष

इस अध्याय के अंतर्गत सुधा अरोड़ा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया जाएगा| जिसमें व्यक्तित्व के अंतर्गत सुधा अरोड़ा का जन्म, शिक्षा, बचपन, माता-पिता, परिवार, परिवेश, विवाह एवं संतति, आदि का अध्ययन किया जाएगा| और कृतित्व के अंतर्गत सुधा अरोड़ा के समग्र साहित्य का सामान्य परिचय दिते हुए अध्ययन किया जाएगा| अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा|

व्दितीय अध्याय : सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य की विवेचना

२.१. उपन्यास साहित्य की विवेचना

२.२. कहानी साहित्य की विवेचना

इस अध्याय के अंतर्गत सुधा अरोड़ा के समग्र कथा साहित्य की विवेचना की जायेगी |

तृतीय अध्याय : सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में हिंसा का स्वरूप

२.१. सुधा अरोड़ा के उपन्यासों में हिंसा का स्वरूप

इस अध्याय के अंतर्गत सुधा अरोड़ा के उपन्यास साहित्य में आयी हुई हिंसा और उसके स्वरूप का अध्ययन किया जाएगा | हिंसा अलग-अलग प्रकारों की हो सकती है | कुछ हिंसा के प्रकार निम्नलिखित रूप से दिए जा रहे हैं, जिसके आधार पर लेखिका सुधा अरोड़ा के उपन्यासों का अध्ययन किया जा सकता है | जैसे - शाब्दिक हिंसा, अशाब्दिक हिंसा, शारीरिक हिंसा, पारिवारिक हिंसा, सामाजिक हिंसा, धार्मिक हिंसा, आदि कई प्रकारों की हिंसा हो सकती है | लेखिका के साहित्य के आधार पर उक्त हिंसा प्रकारों का अध्ययन किया जाएगा|

२.२ सुधा अरोड़ा के कहानियों में हिंसा का स्वरूप

इस अध्याय के अंतर्गत लेखिका के कहानी साहित्य में आयी हुई हिंसा एवं उसके स्वरूप का अध्ययन किया जाएगा| जिसमें अलग-अलग हिंसा के प्रकारों के आधार पर शोध किया जाएगा| मुख्य रूप से हिंसा के प्रकारों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं - हिंसा के स्थुल प्रकार, हिंसा के सूक्ष्म प्रकार| इसके अलवा भी हिंसा के स्थल, काल, समय के अनुसार अनेक प्रकार हो सकते

हैं| जिसके आधार पर लेखिका के कहानी साहित्य का अध्ययन किया जाएगा| अंत में निष्कर्ष दिया जाएगा|

चतुर्थ अध्याय : सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य का भाषा एवं शिल्प

इस अध्याय के अंतर्गत सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य की भाषा एवं शैलीगत अध्ययन किया जाएगा| क्योंकि रचना को समझने के लिए पहला माध्यम भाषा ही होती है| भाषा पाठकों को प्रभावित करने का प्रथम माध्यम होती है| भाषा के व्दारा ही पाठक लेखक के विचारों तक पहुँच पाता है| इसकारण साहित्य की भाषा का अध्ययन करना आवश्यक होता है| प्रत्येक लेखक/लेखिकाओं की अपनी एक भाषा होती है, जिसका आधार लेकर वह अपना साहित्य सजृन करता है| उस भाषा में आयें हुए शब्द, वाक्य-प्रचार, मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ आदि का अध्ययन करने से हम उस रचना से पूर्ण रूप से जुड़ सकते हैं| इसलिए लेखिका के कथा साहित्य की भाषा का अध्ययन करना आवश्यक लगता है| अंत में इस अध्याय का निष्कर्ष दिया जाएगा|

पंचम अध्याय : उपसंहार एवं निष्कर्ष :

उक्त सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष दिए ही जायेंगे साथ ही इस अध्याय के अंतर्गत समग्र अनुसंधान के निष्कर्ष देते हुए उक्त अध्याय एवं अनुसन्धान का को समाप्त किया जाएगा|

संदर्भ सूची :

कहानी संग्रह :

१. काला शुक्रवार - सुधा अरोड़ा

२. रहोगी तुम वही - सुधा अरोड़ा

३. एक औरत : तीन बटा चार - सुधा अरोड़ा

४. दस प्रतिनिधि कहानियाँ - सुधा अरोड़ा

५. बुत जब बोलते है - सुधा अरोड़ा

उपन्यास :

१. यहीं कहीं था घर - सुधा अरोड़ा

शोधनिर्देशक

डॉ. भगवान एन. जाधव

सहयोगी प्राध्यापक,

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र,

पीपल्स कॉलेज, नांदेड |

शोधछात्रा

शेख़ नसीम बानो शेख़ अहेमद